BA-2
Paper- 3
Geography of India & Bihar

(LECTURE - 3)

बिहार : प्राकृतिक प्रदेश

Vishal
V.S.J. College

- दक्षिणी बिहार का मैदान -

यह मैदान गंगा के दक्षिण में विस्तृत है जो बिहार के दक्षिण स्थित पहाड़ियों और पठारी भाग से निकलने वाली नदियों द्वारा लायी गयी जलोढ़ मिट्टी के निक्षेपण से बना है। पश्चिम से पूर्व की ओर मैदान क्रमशः संकीर्ण होता गया है। सामान्य ढाल दक्षिण से उत्तर की ओर है किन्तु गंगा के समीप ढाल पश्चिम से पूर्व की ओर है। इस मैदान में कहीं-कहीं छोटानागपुर पठार के बाहरी भाग पहाड़ियों के रूप में पाए जाते हैं, जिनमें गया की प्रेतशिला, रामशीला और जेठियन; बिहारशरीफ की पीर पहाड़ी; राजगीर की रत्नागिरि, विपुलगिरि, उदयगिरि एवं वैभवगिरि प्रमुख हैं।

गंगा के दक्षिणी तट पर दक्षिण बिहार की नदियों के निक्षेपण द्वारा प्राकृतिक तटबंध का निर्माण हुआ है। इसकी रुकावट के कारण दक्षिण से आनेवाली नदियाँ बहुत दूर तक गंगा के समानांतर बहती हैं। इस तटबंध के दक्षिण में निम्न भूमि है, जिसे 'टाल' कहते हैं। इसका विस्तार पटना से मोकामा तक है, जो वर्षा ऋतु में जल से भरा रहता है। टाल के दक्षिण में विस्तृत उपजाऊ मैदान है, जिसकी ऊंचाई दक्षिण में बढ़ती जाती है। फिर यह मैदान पठारी भाग में मिल जाता है। दक्षिणी बिहार के मैदान के तीन उपविभाग मिलते हैं :-

1. **दक्षिणी बिहार का पश्चिमी मैदान (भोजपुर का मैदान)** -
यह क्षेत्र के पश्चिम में स्थित है, जहाँ टाल नहीं मिलता है।

II. दक्षिणी बिहार का मध्यवर्ती मैदान (मगध का मैदान) — यह सोन और किउल के बीच स्थित है। इसके दक्षिण में छोटी-छोटी पहाड़ियाँ हैं।

III. दक्षिणी बिहार का पूर्वी मैदान — इसका विस्तार किउल नदी से राजमहल की पहाड़ी तक है। यह अर्द्धचन्द्राकार है जो तीन ओर से पहाड़ियों से घिरा है।

Scanned with CamScanner

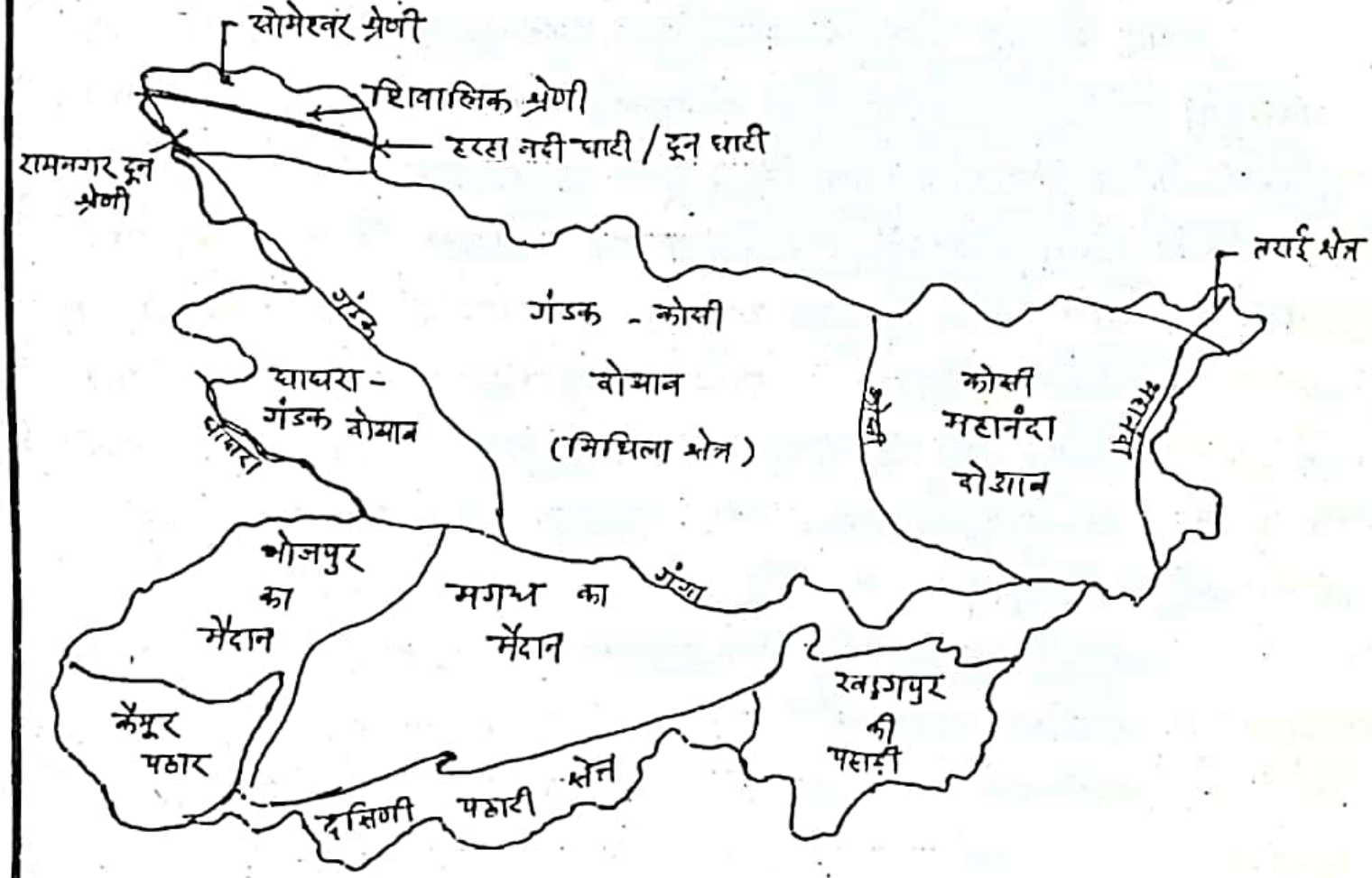

बिहार : प्राकृतिक प्रदेश

Scanned with CamScanner